मद्रित पष्ठों की संख्या : 7

BHDC-109

बी. ए. (ऑनर्स) हिन्दी (बी. ए. एच. डी. एच.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर. 2021

बी.एच.डी.सी.-109 : हिन्दी उपन्यास

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 12×3=36

(क)निर्मला-दीदीजी, अब मझे किसी वैद्य, हकीम की दवा फायदा न करेगी। आप मेरी चिन्ता न करें। बच्ची को आपकी गोद में छोडे जाती हँ। अगर

जीती-जागती रहे तो किसी अच्छे कल में विवाह कर दीजियेगा। मैं तो इसके लिए अपने जवीन में कछ न कर सकी, केवल जन्म देने भर की अपराधिनी हँ। चाहे क्वाँरी रखियेगा, चाहे विष देकर मार डालिएगा, पर कपात्र के गले न मढिएगा। इतनी ही आपसे मेरी विनय है। मैंने आपकी कछ सेवा न की, इसका बडा द:ख हो रहा है। मझ अभागिनी से किसी को सख नहीं मिला। जिस पर मेरी छाया भी पड गई उसका सर्वनाश हो गया। अगर स्वामीजी कभी घर आवें तो, उनसे कहिएगा कि इस करम-जली के अपराध क्षमा कर दें।

(ख)उस समय भीतर ही भीतर सचमच मझे भी यह मालम हो रहा था कि यहाँ देर तक मेरा रहना ठीक न होगा. लोग जाने क्या समझें। मैं आज इसी

पर आश्चर्य किया करता हूँ कि 'लोग क्या समझेंगे', इसका बोझ अपने ऊपर लेकर हम क्यों अपनी चालाकी को सीधा नहीं रखते है, क्यों उसे तिरछा, आडा बनाने की कोशिश करते हैं। लोगों के अपने मँह हैं, अपनी समझ के अनसार वे कछ-कछ क्यों न कहेंगे ? इसमें उनको क्या बाधा है, उन पर किसी का क्या आरोप हो सकता है ? फिर भी उस सबका बोझ आदमी अपने ऊपर स्वीकार कर अपने भीतर के सत्य को अस्वीकार करता है—यह उसकी कैसी भारी मर्खता है।

(ग) तलसी ने सीढियाँ पार कीं, डयोढी, बगीचा और फाटक पार किया, बाहर निकल आए। सडक पर कछ दर जाकर उन्होंने एक बार और उस घर पर दष्टि डाली। लगा कि जैसे जीव का अपने एक जन्म से साथ छट रहा हो। मन अब भी सबकछ

वही चाहता है, किन्त ज्ञान यथार्थ-बोध कराता है। जो मनष्य बनकर जन्मता है उसके मन को यह हक है कि वह असम्भव से असम्भव वस्त की चाहना भी कर ले, पर उसे पाने की शक्ति और औचित्य के बिना क्या वह हक यथार्थ है ? अपनी परिस्थितियों पर विचार न करने वाला व्यक्ति मर्ख होता है। तलसीदास इस समय मन के दर्द में ज्ञान की गँज से बचना चाहते थे।

(घ) कई महीनों के उपरांत लोग अपने घरों को लौट आये। अत्यंत उग्र कष्ट पानी का था। सडी-गली लाशों के कारण सारे कएँ, गंदे और खराब हो गये थे। नये कएँ इतनी जल्दी खोदे नहीं जा सकते थे। किले के भीतर अच्छे मीठे पानी का परा प्रबंध था। राजा मानसिंह ने पनर्वास के लिए आई हई जनता को किले के भीतर अस्थायी निवास दे दिया

और कओं के स्वच्छ करने का काम तेजी के साथ आरम्भ कर दिया। कछ कओं को साफ कर लिया गया और तली तक कई बार उनका पानी निकाल दिया गया। फिर गंगाजल की बँदों और मंत्रों के उच्चारण से उनका पानी पीने योग्य बना लिया। इन कओं के आसपास के मकानों की जनता किले के बाहर आ गई। परन्त अभी अनेक कएँ शद्ध होने को पडे थे।

(ङ) बाहर की भीड-भाड से लौटते तो घर बडा सनसान-सा लगता है। एक अजीब-सा सन्नाटा ! जहाँ कहीं भी 'वे', पापा और बंटी बैठते, जाने कहाँ बंटी के मन में अ-ब-स उभर आता। उसके बाद बराबर लगता कि पापा की आँखें भी सब तरफ से बस उसे ही देख रही हैं। पर मम्मी की

तरह पापा की आँखों को उसने कभी नहीं देखा—न प्लेट में, न इधर-उधर।

2. उपन्यास के प्रमख भेदों पर प्रकाश डालिए। 16

3. 'निर्मला' उपन्यास की भाषा-शैली की विशेषताएँ बताइए। 16

4. 'त्याग-पत्र' का कथासार प्रस्तत करते हए उसके कथानक की विशेषताओं की चर्चा कीजिए। 16

5. अमतलाल नागर के उपन्यास साहित्य का परिचय दीजिए। 16

6. 'मगनयनी' उपन्यास के आधार पर लाखी की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। 16

7. 'आपका बंटी' उपन्यास की संवाद-योजना की विशिष्टताओं का विवेचन कीजिए। 16

8. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $8 \times 2 = 16$

(क) प्रेमचंद यगीन हिन्दी उपन्यास

(ख) सेवासदन

(ग) 'त्याग-पत्र' का शैलीगत वैशिष्टय

(घ) 'मानस का हंस' के गौण पात्र